ऐन फ्रैंक

ऐन फ्रैंक

नात्सियों का उदय

1918 में दुनिया में तीन साल से अधिक समय से लड़ाई छिड़ी थी. डेढ़ करोड़ से अधिक सैनिकों और नागरिकों की मौत हुई थी और यूरोप एक विशाल युद्ध क्षेत्र में बदल गया था. लेकिन 1918 की गर्मियों तक, मित्र राष्ट्र - फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन धीरे-धीरे जीत की ओर बढ़ रहे थे.

AAARGH!

BOOM!

नवंबर तक, जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया था. वर्साय की संधि के आधार पर मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को बतौर मुआवज़ा भारी धनराशि देने को मजबूर किया था. जर्मनी ने काफी ज़मीन भी खोई थी.

युद्ध शुरू करने के लिए जर्मनी को दंड मिलना चाहिए!

युद्ध के बाद के पहले कुछ वर्षों में, जीवन काफी कठिन था. लेकिन 1920 के मध्य तक, लोगों का जीवन कुछ बेहतर हुआ और वे ज़िंदगी का आनंद ले सकें.

ये लोग इतने खुश क्यों हैं? हम तो युद्ध हार गए.

यहाँ से बाहर निकलो!

हम जीत सकते थे. ज़रा जर्मनी को तो देखो.

राजनेताओं ने हमारी पीठ में छुरा घोंपा.

कई जर्मन पूर्व सैनिक युद्ध हारने से नाराज थे. उन्होंने वर्साय की संधि के लिए नई सरकार को दोषी ठहराया था.

उनमें से एक सैनिक एडोल्फ हिटलर था. उसने एक नई पार्टी नेशनल सोशलिस्ट या नात्ज़ी पार्टी की स्थापना की.
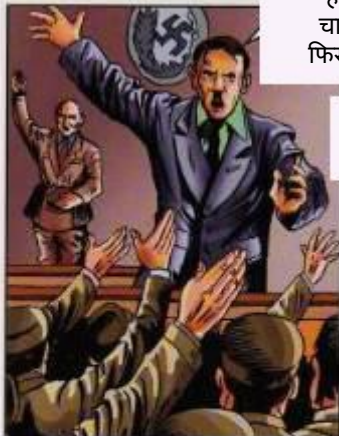
हिटलर एक शानदार वक्ता था. उसने हजारों पूर्व सैनिकों को नात्ज़ी पार्टी में शामिल होने के लिए राजी किया.

नवंबर 1923 में, हिटलर ने म्यूनिख में विद्रोह शुरू करने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही सेना ने उसे दबा दिया.

अब ज़्यादातर लोगों को उम्मीद थी कि हिटलर, जर्मनी को फिर से मजबूत बनाएगा. हिटलर ने सभी समस्याओं के लिए यहूदियों को दोषी ठहराया.

लोग मुझे वोट देकर सत्ता में लाएंगे.

यहूदी आपकी नौकरियां और धन लूट रहे हैं. अब उनसे लड़ने का समय है!

सारी गलती यहूदियों की ही है!

APPLAUSE!

अब मैं और क्या कर सकता हूँ?

जर्मनी में अब नौकरियां ही नहीं हैं.

हम अपने पैसों से कुछ भी नहीं खरीद सकते हैं.

हिटलर को नौ महीने की जेल हुई. सत्ता कैसे हासिल की जाए यह सोचने का वक्त उसे जेल में मिला. जेल में उसने अपनी योजना "मेइन कैम्फ" (मेरा संघर्ष) नामक किताब में लिखी. शुरू में नात्ज़ी बहुत लोकप्रिय नहीं थे. फिर 1929 में, जर्मन अर्थव्यवस्था ढह गई. कई मज़दूरों ने अपनी नौकरी और अपनी सारी बचत खो दी.

हिटलर की निजी सेना "स्टॉर्मट्रूप" ने, यहूदियों की दुकानो और इमारतों पर हमला करना शुरू कर दिया.

SMASH!

जहां से आए थे वहीँ वापस जाओ!

अच्छा सबक सिखाया यहूदियों को!

यह वो दुनिया थी जिसमें ऐन फ्रैंक बड़ी हुई. ऐसी दुनिया जहां यहूदी होने के कारण हमला, जेल और हत्या हो सकती थी ...

तथ्य

हिटलर द्वारा डिजाइन किया गया नात्सी "स्वस्तिक" एक प्राचीन प्रतीक पर आधारित था जो 3,000 वर्षों से उपयोग में था. यह चिन्ह मूल रूप से जीवन और अच्छाई का प्रतीक था.

ऐन फ्रेंक के शुरू के साल

ऐन फ्रेंक का जन्म 12 जून 1929 को हुआ. वो ओटो और एडिथ फ्रेंक की दूसरी बेटी थी, जो जर्मन-यहूदी थे. फ्रेंक परिवार जर्मनी के फ्रेंकफर्ट में रहता था. उनके परिवार के सदस्य वहां 300 वर्षों से थे.

1929 में, फ्रेंकफर्ट में लगभग 30,000 यहूदी रहते थे. उस समय फ्रेंकफर्ट एक सहिष्णु शहर था.

तथ्य

यहूदी लोगों पर हमले मध्य युग के बाद से शुरू हुए, लेकिन 20 वीं शताब्दी तक यहूदी यूरोप के कई हिस्सों में शांति से रह रहे थे. यहूदी, यूरोप में 2,000 वर्षों से रह रहे थे. 1933 में जब हिटलर सत्ता में आया तब यूरोप में लगभग 90 लाख यहूदी रहते थे.

कई यहूदियों की तरह, ऐन के पिता ओटो, प्रथम विश्व युद्ध में, जर्मन सेना के लिए लड़े थे.

युद्ध के बाद, ओटो ने अपने पिता के बैंक में काम किया. उस समय उनकी मुलाकात ऐन की माँ एडिथ से हुई.

1925 में, ओटो और एडिथ ने शादी की.

फ्रेंकफर्ट में फ्रेंक के परिवार का जीवन काफी खुशहाल था.

लेकिन फ्रैंक की खुशी कम देर ही ज़िंदा रही. 1930 की शुरुआत में, नात्ज़ियों का उदय सभी जर्मन यहूदियों के लिए एक खतरा बना.

मुझे यकीन नहीं है.

हिटलर पूरी तरह से पागल है. कोई उसे भी वोट नहीं देगा.

जैसे-जैसे जर्मनी गरीब होता गया, नात्ज़ियों की ताकत बढ़ती गई. हिटलर के नए जर्मन साम्राज्य के वादे को कई समर्थक मिले.

मुझे नात्ज़ियों से डर लगता है.

मुझे भी! नात्ज़ी दिन-ब-दिन अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं.

अब फ्रैंक परिवार को जर्मनी के भविष्य के बारे में चिंता होने लगी.

यहूदी हमारे दुश्मन हैं!

रेडियो सुनो!

हिटलर की सत्ता में हम सुरक्षित नहीं होंगे

जनवरी 1933 हिटलर जर्मनी का चांसलर बना. अब नात्ज़ियों की सत्ता थी.

हिटलर ने यहूदियों पर अपना शिकंजा कसा. यहूदियों को नौकरियों से निकाला गया और उनकी दुकानों का बॉयकॉट हुआ. यहूदी किताबों को जलाया गया.

फिर फ्रैंक परिवार ने जर्मनी छोड़ने का फैसला किया.

फ्रैंक परिवार जर्मनी में अपने घर से हॉलैंड के एम्स्टर्डम में शिफ्ट हुए.

1933 की गर्मियों में, ओटो फ्रैंक, हॉलैंड के लिए रवाना हुए.

एम्स्टर्डम में ओटो ने एक नया व्यवसाय डच ओपेकटा कंपनी स्थापित की. वो पेक्टिन बेचते थे. पेक्टिन पाउडर जाम और ग्रेवी बनाने के काम आता था.

एक साल के अंदर, एडिथ, मार्गोट और ऐन (अब 4 साल की) भी एम्स्टर्डम में ओटो के साथ रहने आए.

ऐन को एम्स्टर्डम में शुरू के साल बहुत अच्छे लगे. 1930 के मध्य तक फ्रैंक परिवार वहां अच्छी तरह बस गया था.

वो फूल बेहद सुन्दर हैं.

बेहद खूबसूरत!

मुझे पकड़ने की कोशिश करो ऐन.

तुम बहुत तेज़ हो मॉर्गोट!

हमारे साथ आकर खेलो ऐन.

ऐन और मार्गोट एक मोंटेसरी स्कूल में थे, जहाँ उनके कई दोस्त थे.

वे अपनी छुट्टियां समुद्र तट पर बिताते थे.

1938 में ओटो का कारोबार अच्छा चल रहा था. हरमन वॉन पेल्स उसका बिजनेस पार्टनर था.

लेकिन फ्रैंक ने जिस नफरत से छुटकारा पाने की कोशिश की थी उसने उनका पीछा किया.

जर्मनी में कई यहूदी सिनेगॉग और हजारों यहूदी दुकानों को नात्ज़ी सैनिकों ने तोड़ा और जलाया.

तथ्य

9 और 10 नवंबर 1938 को, नात्ज़ियों ने पूरे जर्मनी में 7,000 से अधिक यहूदी दुकानों को नष्ट किया और 267 सिनेगॉग पर हमला किया. उनकी कांच की टूटी हुई खिड़कियों के कारण उसे "क्रिस्टाल्नैक्ट"(टूटी कांच की रात) के रूप में भी जाना जाता है.

नवंबर 1938 में, नात्ज़ियों ने यहूदियों की पहली सामूहिक गिरफ्तारी शुरू की. 30,000 यहूदी आदमियों और लड़कों को कंसंट्रेशन शिविरों में भेजा गया.

1939 में, जर्मनी में रहने वाले आधे यहूदी वहां से भाग गए थे. ऐन के चाचा अमेरिका चले गए थे.

ऐन की दादी उनके साथ एम्स्टर्डम में रहने आईं.

फिर सितंबर 1939 में, हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया. दूसरा विश्व युद् शुरू हो गया था.

नात्ज़ियों के अधीन जीवन

मई 1940 में, जर्मन ने हॉलैंड और फ्रांस पर आक्रमण किया. फ्रैंक परिवार फिर से नाज़ी शासन के अधीन रहने को मजबूर हुआ. कोई भाग नहीं सकता था क्योंकि - नात्ज़ी सैनिक ट्रेन स्टेशनों और सीमाओं पर तैनात थे. हर डच नागरिक के लिए एक पहचान पत्र (आईडी) कार्ड रखना अनिवार्य था. इससे जर्मन यह पता लगाते कि यहूदी कौन थे और वे कहाँ रहते थे.

ये सभी सैनिक कौन हैं, पिताजी?

वे नात्ज़ी हैं. अब उनका ही बोलबाला है.

क्या युद्ध खत्म हो चुका है?

नात्ज़ियों को यहूदियों से नफरत है.

मुझे भी नात्ज़ियों से नफरत है. हमने उनका क्या बिगाड़ा है?

अपनी आवाज धीमी रखो, ऐन!

हम क्या बोलें? अब से हमें बहुत सावधान रहना होगा.

जर्मन लोगों ने राशन कार्ड लागू किए. राशन कार्ड के बिना आप किसी दुकान से खाना नहीं खरीद सकते थे.

मुझे चीनी और आटा चाहिए.

शुरू में ऐन और मार्गोट के जीवन में बहुत बदलाव नहीं आया. वे अभी भी अपने दोस्तों के साथ खेल सकती थीं और स्कूल जा सकती थीं. लेकिन जल्द ही सब कुछ तेज़ी से बदला ...

जर्मनों ने डच-नात्ज़ियों की मदद से यहूदियों के खिलाफ कानून बनाए. उन्होंने यहूदियों को अपना कारोबार, गैर-यहूदियों को सौंपने के लिए मजबूर किया. ओटो को इस बात की उम्मीद थी. इसलिए उसने पहले ही अपने गैर-यहूदी सहयोगियों विक्टर कुग्लर और जॉन्स क्लेमैन को अपना व्यापार सौंप दिया था.

हम आपके नाम पर ही धंधा चलाएंगे.

आप भरोसा रखें. आप हमारे मालिक होंगे.

फरवरी 1941 में, डच नात्ज़ियों ने यहूदी दुकानों को नष्ट किया. कई यहूदियों ने उसका कड़ा विरोध किया. लेकिन जर्मन सैनिकों ने 400 से अधिक यहूदी लोगों को गिरफ्तार किया.

अब नीदरलैंड में यहूदी, वास्तव में खतरे में हैं.

तथ्य

डच नात्ज़ियों ने जर्मनों के साथ मिलकर काम किया. कुछ मुखबिरों को यहूदियों पर जासूसी करने के लिए पैसे मिलते थे. किसी यहूदी को शरण देने का दंड अत्यंत गंभीर था. इस "अपराध" के दोषी को तुरंत गोली मारी जा सकती थी या नात्ज़ी अधिकारी उसे जेल में डाल सकते थे.

जल्द ही यहूदियों को सिनेमा या पार्कों में, कारों और गाड़ियों में सवारी करने की अनुमति नहीं थी.
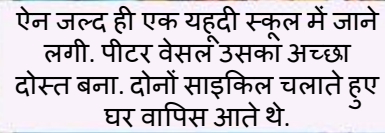
ऐन जल्द ही एक यहूदी स्कूल में जाने लगी. पीटर वेसल उसका अच्छा दोस्त बना. दोनों साइकिल चलाते हुए घर वापिस आते थे.
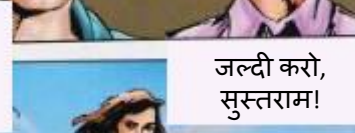
तथ्य

अप्रैल 1942 से हॉलैंड में यहूदियों को डेविड का पीला सितारा पहनना ज़रूरी था, जिस पर जूड - JOOD (यहूदी) शब्द लिखा हुआ था.

छिपने चले!

महीनों तक फ्रैंक परिवार और उनके सहायकों ने थोड़ा-थोड़ा फर्नीचर आदि गुप्त फ्लैट में शिफ्ट किया. उन्होंने अटारी में खाने का सामान जमा किया.

पीठ का ध्यान रखो!

सब अच्छा चल रहा था. फिर एक दिन एक पुलिस वाले ने मार्गोट को एक पत्र देने के लिए दरवाजा खटखटाया.

मार्गोट घबरा गई.

अब समय नहीं है. हम छुप जाते हैं.

ऐन ने किताबों और फोटो से अपना बैग भरा.

ओटो ने ओपेकटा के लोगों को सचेत किया.

अगले दिन 6 जुलाई को, ऐन सुबह 5.30 बजे उठी. फ्रैंक परिवार शिफ्ट होने लिए तैयार था.

तथ्य

फ्रैंक परिवार अपने साथ सूटकेस नहीं ला जा सकता था - नहीं तो उनका प्लान सबको पता चल जाता. उसकी बजाए, ऐन ने दो बनियान, तीन जोड़ी पैंट, एक स्कर्ट, एक जैकेट और एक रेनकोट पहना. वो यही कपड़े अपने नए घर में ले गई.

मार्गोट, मियाप के साथ चली.

ऐन अपने माता-पिता के साथ-साथ चली. फ्रैंक परिवार ने घर पर एक नोट छोड़ा कि वे विदेश भाग गए हैं.

फ्रैंक परिवार तेज़ बारिश में आगे बढ़े. प्रत्येक के हाथ में एक बैग था जो लबालब भरा हुआ था.

गुप्त फ्लैट.

एम्स्टर्डम में कई घरों की तरह, ओटो का ऑफिस नहर की बगल में था.

ऐन को वेस्टर्न क्लॉक (घडी) की आवाज बहुत पसंद थी, जो हर पंद्रह मिनट बाद बजती थी.

फ्रैंक परिवार जल्दी से अंदर खिसककर ऊपर वाले गुप्त फ्लैट में चला गया.

फ्लैट में मार्गोट पहले से ही उनका इंतजार कर रही थी.

शुक्र है, आप सुरक्षित हैं!

एक हफ्ते बाद 13 जुलाई को, वैन पेल्स परिवार भी फ्रैंक परिवार के साथ रहने आया. ऐन फ्रैंक का परिवार और अन्य लोग उस गुप्त फ्लैट में दो साल तक छिपे रहे. फ्लैट इतने लोगों के लिए काफी तंग था और उन्हें बहुत सावधानी बरतनी पड़ती थी जिससे कोई उन्हें देखे या सुने नहीं. दो साल तक अगर दरवाजे पर कोई दस्तक होती तो वे डर जाते थे.

गुप्त फ्लैट दो मंजिलों पर था, हालांकि फ्रैंक और वैन पेल्स परिवार सप्ताह के अंत में और शाम को पहली मंजिल पर ऑफिस का भी उपयोग करते थे.
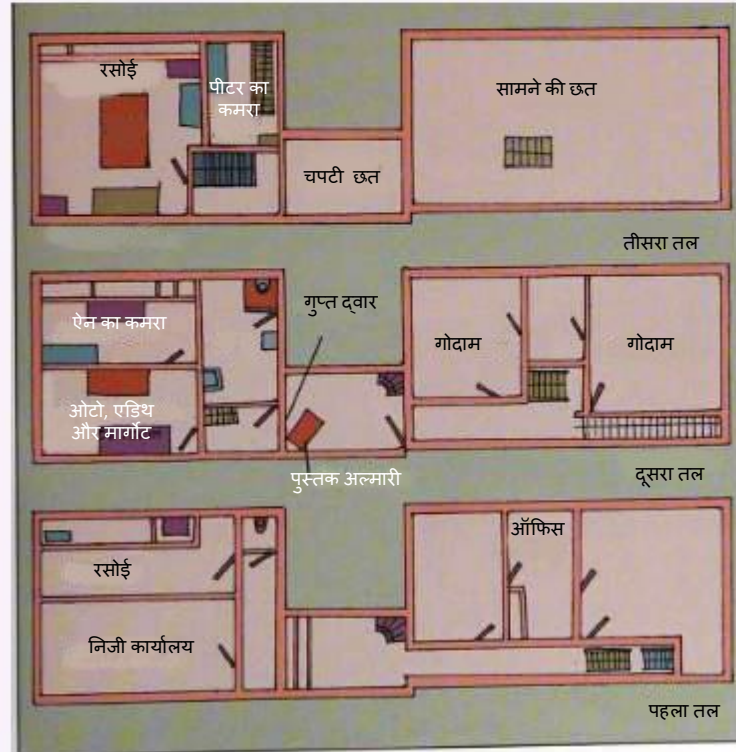
ऐन ने अपने 13 वें जन्मदिन पर एक डायरी भेंट में मिली. वो छुपने से दो हफ्ते बाद की बात थी.

ऐन ने अपने रोज़ाना के जीवन पर एक डायरी लिखी. उसने अटारी में बैठकर छिपने वाले जीवन के अपने अनुभवों के बारे में लिखा.

ऐन ने अपने रहस्यों को अपनी डायरी में लिखा.

your DIARIES ARE IMPORTANT

तुम्हारी डायरी बहुत महत्वपूर्ण है.
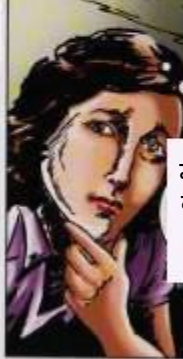
मैं हमेशा एक लेखक बनना चाहती थी. मैं अपनी डायरी एक उपन्यास की तरह लिखूंगी.

तथ्य

ऐन को 13 वें जन्मदिन पर वो डायरी भेंट में मिली थी. उसने अपनी डायरी में पत्र "किटी" को संबोधित किए थे.

जब ऐन ने रेडियो पर सुना कि उसकी डायरी के प्रकाशन की सम्भावना थी, फिर उसने फ्लैट में रहने वाले लोगों के नाम बदले. इसलिए वैन पेल्स परिवार का नाम उसकी डायरी में वैन दान है.

क्योंकि वे फ्लैट में बड़ी जल्दी में शिफ्ट हुए, इसलिए वो एकदम गड़बड़ हालत में थीं.

ओटो, हमें इन चीज़ों को रखने के लिए एक अलमारी बनानी चाहिए.

ठीक है, हरमन. अटारी में लकड़ी का बड़ा ढेर पड़ा है.

ऐन ने पोस्टकार्ड और फिल्म स्टार्स के पोस्टर दीवारों पर चिपकाकर अपने बेडरूम को सजाया.

मिस्टर कुगलर ने एक भरोसेमंद बढ़ई की मदद से फ्लैट के प्रवेश द्वार के सामने किताबों की अलमारी बनवाई.

मियाप और बीप चुपके से फ्लैट के लिए भोजन लाते थे.

राशन अवैध रूप में काले बाजार में खरीदा जा सकता था लेकिन वो महंगा था.

ऐन को दिन भर फ्लैट के अंदर बड़ी घुटन महसूस होती थी.

जीवन बहुत उबाऊ था - या भयानक.

ऐन की फ्लैट के अन्य निवासियों के साथ हमेशा बनती नहीं थी.

उसने हर दिन पढ़ाई करने की कोशिश की, लेकिन शिक्षक के बिना वो काम कठिन था.

लोग एक-एक करके टिन के टब में नहाते थे.

ऐन कभी भी खतरे को भुला नहीं पाई. जब एक प्लम्बर पाइप को ठीक करने के लिए आया, तो सभी लोग तीन दिनों तक बैठे रहे.

चुस्त रखने के लिए रात को लड़कियां वर्जिश करती थीं.

अपना समय गुजारने के लिए, ऐन स्विट्जरलैंड में चचेरे भाई बर्नार्ड के साथ झूठ-मूठ की खरीदारी करती थी.

एक नया साथी

16 नवंबर, 1942 को फ्लैट में मौजूद सात लोगों के साथ एक आठवां व्यक्ति शामिल हुआ. फ्रिट्ज़ फ़फ़र.

मिस्टर फ़फ़र ने बताया कि कैसे उनके यहूदी दोस्तों को, गेस्टापो पकड़ कर ले गई थी.

गेस्टापो, नात्ज़ी गुप्त पुलिस थी. वे रात को यहूदियों की तलाश में सड़कों पर घूमते थे और जानकारी देने वालों को रिश्वत देते थे.

एम्स्टर्डम पर एलाइड विमानों ने बमबारी की और बंदूकों के शोर ने उन्हें पूरी रात जगाए रखा. तब पीटर ने अटारी में चूहों के झुंड की खोज की.

लेकिन कुछ दिन अच्छे भी होते थे. ओपेकटा के कर्मचारियों ने सेंट निकोलस दिवस (5 दिसंबर) पर सभी को एक-एक उपहार दिया.

मिसेज़ वैन पेल्स हिलना बंद करें.

मिस्टर फ़फ़र एक डैंटिस्ट थे, उन्होंने मिसेज़ पेल्स के दो दांत उखाड़े. उसमें सभी का काफी मनोरंजन हुआ.

इस बीच, जैसे-जैसे महीने बीतते गए, ऐन, पीटर वैन पेल्स के करीब आई.

फ्रैंक परिवार ने फ्लैट में 18 महीने बिताए थे. लेकिन अब असली उम्मीद जगी थी. नात्ज़ी हर फ्रंट पर पीछे हट रहे थे.

1944 की शुरुआत तक, फ्लैट के सभी लोग फ्रांस पर मित्र देशों के आक्रमण - और अपनी स्वतंत्रता के बारे में सोच रहे थे!

लेकिन जिंदगी दिन-ब-दिन मुश्किल होती जा रही थी. फ्लैट में भोजन, साबुन और कपड़ों की कमी रहती थी.

चोरों ने ऑफिस, स्टोररूम में सेंध लगाई. उन्हें वहां भोजन मिलने की उम्मीद थी.

चोरों ने स्टोररूम तोड़ा था, लेकिन मिस्टर वैन पेल्स ने उन्हें डरा कर भगा दिया.

कुछ मिनटों के बाद कमरे में एक तेज रोशनी चमकी. क्या वो गेस्टापो थी? फ्लैट के सदस्य सीढ़ी चढ़कर तुरंत ऊपर भागे.

बाद में डच पुलिस ने इमारत की तलाशी ली. वे किताबों की अलमारी के पास भी गए, उन्होंने उसे हिलाया - लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला.

ऊपर फ्लैट के सदस्य डर के मारे कांपते हुए अंधेरे में बैठे रहे.

हर कोई घर में चोरी से बहुत हिल गया था. लेकिन दो महीने बाद एक शानदार खबर मिली - अमेरिकी और ब्रिटिश सैनिक अब फ्रांस पहुँच चुके थे.

खबर मिली कि हिटलर को मारने का प्रयास हुआ है. वो बच निकला. पर अब आजादी पहले से कहीं ज्यादा करीब थी.

अंतिम महीने

फिर 1944 की 4 अगस्त को सुबह को लगभग 10 बजे फ्रैंक परिवार का सबसे बड़ा डर सच साबित हुआ. विक्टर कुगलर ने ऑफिस के दरवाजे पर दस्तक सुनी. अचानक, एक नात्ज़ी अधिकारी के नेतृत्व में पुलिस के कुछ लोग फ्लैट में तेज़ी से घुसे.

यहूदी फ्लैट में सबसे ऊपर छिपे हैं. उन्हें भागने मत देना.

मिस्टर कुगलर को नात्ज़ियों ने फ्लैट में गुप्त प्रवेश दिखाने के लिए मजबूर किया था. फ्रैंक और वैन पेल्स परिवार के पास बचने का कोई समय नहीं था. दो साल छिपने के बाद उनके सारे प्रयास व्यर्थ गए.

ऐन और फ्लैट के अन्य भयभीत सदस्यों को सीढ़ियों से नीचे ले जाया गया और एक ट्रक में उन्हें धकेल दिया गया.

विक्टर कुगलर और जो क्लेमैन को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया.

लेकिन मियाप को गिरफ्तार नहीं किया. बाद में उसे फ्लैट में ऐन की डायरी के पन्ने मिले.

फ्रैंक और वैन पेल्स परिवारों को नीदरलैंड के उत्तर में स्थित वेस्टरबर्क शिविर में ले जाया गया. फिर 3 सितंबर 1944 को उन्हें पोलैंड के कुख्यात मृत्यु शिविर औशविट्ज़ के लिए एक ट्रेन में रवाना किया गया.

नात्ज़ियों ने यहूदियों को मवेशियों की तरह रेलगाड़ी के डिब्बों में भरा. यात्रा में तीन दिन लगे और रास्ते में कई लोगों की मौत हो गई.

मृत्यु शिविर में यहूदियों को दो समूहों में बांटा गया - वे जो काम करने लायक थे, और बाकी जो लोग मरने जाने वाले थे.

जब नात्ज़ियों ने रूस को पीछे छोड़ा, तब मार्गोट और ऐन को जर्मनी में वापस दूसरे शिविर, बेलसेन में ले जाया गया.

बेलसेन बेहद गंदा और बीमारियों से ग्रस्त था.

मार्च 1945 में, ब्रिटिश सैनिकों द्वारा उनके शिविर को मुक्त किए जाने के कुछ हफ़्ते पहले, ऐन और मार्गोट को टाइफाइड की बीमार हुई. भुखमरी से वे कमजोर हुईं और फिर जल्द ही मर गईं. तब ऐन सिर्फ 15 साल की थी.

तथ्य

कुल मिलकर नात्ज़ियों ने साठ लाख से अधिक यहूदियों की हत्या की. उसमें पंद्रह लाख निरीह बच्चे थे. ऑशविट्ज़ जैसे शिविर, मौत के विशाल कारखाने थे, जहाँ रोज़ाना हजारों लोगों को मौत के घाट उतारा जाता था.

8 मई, 1945 को यूरोप में युद्ध समाप्त हुआ. मित्र राष्ट्रों के सैनिकों ने शिविरों में जो कुछ देखा, वो एकदम भयावह था - मृत्यु, बीमारी और भुखमरी के भयानक दृश्य!

फ्लैट में छिपे आठ लोगों में से ओटो फ्रैंक ही सिर्फ जीवित बचे.1953 में, उन्होंने ऑशविट्ज़ से ज़िंदा बची एक महिला एलफ्रीड मार्कोवित से शादी की. 1980 में 91 वर्ष की आयु में स्विट्जरलैंड में उनका निधन हुआ.

सभी ओपेकटा के कर्मचारी युद्ध से बच निकले. विक्टर कुगलर एक डच जेल शिविर से भाग निकला और जो क्लेमैन को खराब स्वास्थ्य के कारण छोड़ दिया गया.

मियाप ने ओटो को ऐन की डायरी के पन्ने दिए. 1947 में उन्होंने उन्हें ऐन की स्मृति में प्रकाशित किया गया. आज इस पुस्तक की तीन करोड़ से भी अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं.

बेलसेन शिविर स्थल पर ऐन और मार्गोट का एक स्मारक बनाया गया था.

गुप्त फ्लैट
263 फ्रिनबर्गट्रैक
अब एक संग्रहालय बना.
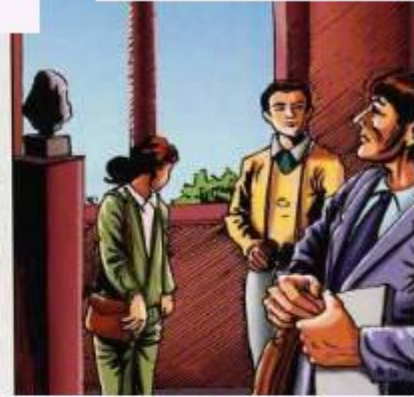
ऐन की डायरी, नात्ज़ियों के वहशीपन, युद्ध की भयावहता और मानव घृणा के बारे में लोगों को हमेशा याद दिलाएगी.

अंत